International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 2, March 2022 |

कौटिल्य का राजनीतिक चिंतन

JAYA AGRAWAL

Assistant Professor, Political Science, Government Girls College, Ajmer, Rajasthan, India

सार

कौटिल्य 317-293 ईसा पूर्व के दौरान चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में मंत्री थे। उन्हें उस समय के सबसे चतुर मंत्रियों में से एक माना जाता है और उन्होंने राज्य, युद्ध, सामाजिक संरचना, कूटनीति, नैतिकता, राजनीति और शासन कला पर अपने विचारों को बहुत स्पष्ट रूप से समझाया है। अपनी अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में। मौर्य साम्राज्य बाद के ब्रिटिश भारत से बड़ा था जो हिंद महासागर से लेकर हिमालय तक और पश्चिम में ईरान तक फैला हुआ था। सिकंदर के भारत छोड़ने के बाद, यह भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य था और कौटिल्य मंत्री था जो राजा को सलाह देता था।

परिचय

कौटिल्य से पहले भारत में अन्य दार्शनिक भी थे जिन्होंने शास्त्रों की रचना की लेकिन उनका काम मजबूत था और इसमें पहले लिखी गई सभी संधियाँ शामिल थीं। मैंने कौटिल्य पर तीन कारणों से विचार किया। सबसे पहले, मैं पूर्व में सोच के पैटर्न पर प्रकाश डालना चाहता था जो मैकियावेली के "प्रिंस" लिखने से बहुत पहले मौजूद था। दूसरे, राज्य, शासन कला और नैतिकता पर कौटिल्य की विचारधाराएँ बहुत यथार्थवादी हैं और आज के संदर्भ में काफी हद तक लागू होती हैं। तीसरा, मुझे लगता है कि कूटनीति पर कौटिल्य के काम को पश्चिमी दुनिया में बहुत कम महत्व दिया गया है और उस क्षेत्र में उनके काम का विश्लेषण करना काफी उपयुक्त है।[1,2,3]

यदि हम युद्ध और शांति, मानवाधिकार, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक न्याय और विश्व व्यवस्था के चार आयाम ढांचे पर राजनेता की तुलना करते हैं तो कौटिल्य की सभी चार पहलुओं पर एक मजबूत राय थी। दरअसल हाल के इतिहास में बिस्मार्क और वुडरो विल्सन जैसे लोग चार में से केवल दो आयामों पर ही अपने विचार प्रदर्शित कर पाए थे। कौटिल्य का काम मुख्य रूप से राजनीतिक यथार्थवाद की एक पुस्तक है जहां राज्य सर्वोपरि है और राजा को अपने राज्य को संरक्षित करने के लिए उनकी पुस्तक में सलाह के अनुसार कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। कौटिल्य का काम यथार्थवाद में इतना गहरा निहित है कि वह उन वीभत्स और क्रूर तरीकों का वर्णन करता है जिन्हें एक राजा को सत्ता में रहने के लिए अपनाना चाहिए। यह एक कारण हो सकता है कि चंद्रगुप्त मौर्य के पोते अशोक, जिन्हें कौटिल्य ने सलाह दी थी, ने हिंसा और युद्ध को त्याग दिया और इस प्रकार धर्म या नैतिकता का मार्ग अपनाया। इस पेपर में, मैं मुख्य रूप से युद्ध, कूटनीति और नैतिकता पर कौटिल्य के विचारों पर ध्यान केंद्रित करूंगा। मैंने कौटिल्य की तुलना प्लेटो जैसे महान दार्शनिकों से करने के लिए एक अनुभाग समर्पित किया है और बाद में इस बात पर विचार किया है कि कौटिल्य के काम की तुलना में मैकियावेली का काम इतना संक्षिप्त और संक्षिप्त क्यों दिखता है। कौटिल्य के कार्यों को आज की राजनीति और नैतिकता के आलोक में देखा जाता है। जैसा कि मैक्स वेबर ने अपने व्याख्यान, "राजनीति एक व्यवसाय के रूप में" में सटीक रूप से कहा था, उन्होंने कहा कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र की तुलना में मैकियावेली का काम हानिरहित था।

कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में शासन, भ्रष्टाचार के सिद्धांत एवं व्यवहार संबंधित मुद्दों पर चर्चा की है।कौटिल्य के अनुसार 'यथा राजा तथा प्रजा' का अर्थ है, किसी राज्य के लोगों का चरित्र वहाँ राजा के समान होगा। यदि राजा में नेतृत्व, जवाबदेही, बुद्धिमत्ता, ऊर्जा, अच्छा नैतिक आचरण तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ, त्वरित निर्णय लेने में सक्षमता आदि गुण हैं तो वह अपनी प्रजा को इन गुणों को अपनाने के लिये प्रेरित करेगा।वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कई प्रकार की राजनीतिक कमियाँ व्याप्त हैं। जैसे अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने हेतु धन-बल का प्रयोग, भाई-भतीजावाद तथा वंशवाद आदि।भारत की राजनीतिक संस्कृति में राजनीतिक विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता की कमी, राजनीतिक दलों में अवसरवादिता, गुटबाजी, लोगों को एकजुट करने हेतु पहचान की राजनीति अर्थात् जाति, धर्म, भाषा जैसे पहचान चिह्नों का उपयोग जैसे लक्षण परिलक्षित होते हैं।हालिया समय में राजनीतिक दलों पर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर फेक न्यूज़, असहिष्णुता तथा उग्रवादी विचार फैलाने के आरोप लगाए गए हैं।ये राजनीतिक लक्षण भारतीय लोगों को प्रभावित करते हैं और जैसा कि कौटिल्य ने 'यथा राजा तथा प्रजा' कहा था, लोगों में राजनीतिक नेतृत्व के चरित्र का अनुसरण करते हुए ये उनमें परिलक्षित होते हैं।लोगों को एकजुट करने के लिये जाति, धर्म, भाषा आदि पहचान चिह्नों के इस्तेमाल की वज़ह से समाज में तनाव और संघर्ष बढ़ रहा है। हमारे नेताओं ने विविधता में एकता का संदेश दिया था, लेकिन हालिया समय में चुनाव जीतने हेतु इस विविधता का दुरुपयोग किया जा रहा है। कई

सांप्रदायिक तथा जातिगत दंगे होते हैं जिनमें आम नागरिक आपराधिक हिंसा में शामिल होते हैं एवं 'यथा राजा तथा प्रजा' वाली उक्ति को पुष्ट करते हैं।[4,5,6]

इसी प्रकार कर अपवंचन भी भारतीय अर्थव्यवस्था का एक लक्षण है। आम नागरिक आय के स्रोतों को जाहिर न करके कर में हेर-फेर और करों से बचने की प्रवृत्ति रखते हैं। इस तरह का भ्रष्टाचार राजनीतिक नेतृत्व से अलग नहीं है क्योंकि वह भी भ्रष्टाचार लिप्त होता है तथा वहाँ भी सार्वजनिक धन का इस्तेमाल अपने लिये किया जाता है।

वर्तमान भारतीय संदर्भ में फेक न्यूज़ का उपयोग का इस बात का परिणाम है कि राजनीतिक दल जानते हैं, इसके उपयोग से आम लोगों को भिन्न-भिन्न समुदायों के खिलाफ असत्यापित, असंतुलित जानकारी के माध्यम से पूर्वाग्रहित कर चुनावी लाभ उठाया जा सकते है। वर्तमान में यह समाज में परिलक्षित भी हो रहा है, जहाँ लोग असत्यापित दावों पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं। उदाहरण के लिये, भीड़ द्वारा की जाने वाली हत्याएँ, गुजरात और बेंगलुरु से प्रवासियों का पलायन आदि।

कौटिल्य ने कहा है कि "अपनी प्रजा के सुख में राजा की प्रसन्नता निहित होती है तथा उनके कल्याण में ही उसका कल्याण होता है। वह केवल उन बातों को अच्छा नहीं मानेगा जो उसे प्रसन्न करती हैं, बल्कि वह उन विषयों पर भी ध्यान देगा जो उसकी प्रजा के लिये लाभकारी हैं।"

इसलिये भारत में राजनीतिक नेतृत्व को आत्मनिरीक्षण करने और भारतीय लोगों के कल्याण के लिये काम करने की आवश्यकता है। उन्हें नेतृत्व, सहिष्णुता, त्याग, प्रेम, विरोधी नेताओं के लिये सम्मान, अखंडता, नैतिक ज़िम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित करना चाहिये। बाद में यह गुण आम लोगों में भी परिलक्षित होंगे।

विचार-विमर्श

आईडीएसए के सैन्य मामलों के केंद्र ने 14 फरवरी 2014 को "आधुनिक भारत के लिए कौटिल्य के अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता" विषय पर आईडीएसए के विजिटिंग फेलो माइकल लिबिग द्वारा एक वार्ता का आयोजन किया। माइकल लिबिग ने अपनी पीएचडी थीसिस का सारांश दिया और इसके आधार पर अनुवर्ती शोध की ओर इशारा किया।[7,8,9]

लिबिग द्वारा सामने लाए गए मुख्य बिंदु इस प्रकार थे:

अंतर्जात राजनीतिक-सांस्कृतिक संसाधन (ईपीसीआर) कुछ हद तक बोझिल शब्द है; यह 'शास्त्रीय' सांस्कृतिक संपत्तियों को संदर्भित करता है जो ए) समय-समय पर बौद्धिक रूप से प्रेरक और प्रेरणादायक बनी हुई है और बी) राजनीतिक-रणनीतिक महत्व रखती है। भारत में ईपीसीआर का एक विस्तृत स्पेक्ट्रम है, जो 'आदर्शवादी' (बुद्ध, अशोक, गांधी) से लेकर 'यथार्थवादी' (कौटिल्य, कामन्दक या, शायद, नेहरू) पदों तक है। कौटिल्य-अर्थशास्त्र (केए) की प्रासंगिकता का मुख्य रूप से विशेषज्ञ साक्षात्कारों के माध्यम से पता लगाया जाता है और गुणात्मक रूप से मूल्यांकन किया जाता है। थीसिस एक 'ट्विन पैक' है: 1) केए की व्याख्यात्मक व्याख्या और 2) केए की प्रासंगिकता की खोज - जिससे 1) 2 की तार्किक पूर्व शर्त है)। थीसिस राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र और इंडोलॉजी के अंतःविषय क्रॉस-सेक्शन का प्रतिनिधित्व करती है। मेयर और कांगले का हवाला देते हुए, लिबिग ने जोर देकर कहा कि केए राजनीतिक सिद्धांत और सैद्धांतिक शासनकला का एक शास्त्रीय कार्य और अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांत का एक मूलभूत पाठ है। कौटिल्य को वास्तव में राजनीतिक यथार्थवाद के सिद्धांत के संस्थापक के रूप में जाना जा सकता है और उनकी सैद्धांतिक उपलब्धियाँ (कम से कम) मैकियावेली के स्तर पर हैं। फिर भी, राजनीति विज्ञान विमर्श में केए को नजरअंदाज कर दिया गया है या 'ओरिएंटलाइज' कर दिया गया है। मैक्स वेबर केए के महत्व को पहचानने वाले पहले पश्चिमी सामाजिक वैज्ञानिक थे। उन्होंने व्यवसाय के रूप में राजनीति और हिंदू धर्म पर धर्म के समाजशास्त्र अध्ययन में ऐसा किया।

अर्थशास्त्र की व्याख्या: पद्धतिगत और सैद्धांतिक पहेलियाँ

केए में केंद्रीय अवधारणा समूह सप्तांग सिद्धांत है: सात राज्य कारक (प्रकृति)। यह अवधारणा समूह राजनीतिक सिद्धांत/सैद्धांतिक राज्यकला के विकास में एक आदर्श प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। सप्तांग सिद्धांत सात प्रकृतियों के समुच्चय के रूप में (राज्य) शक्ति की व्यापक समझ प्रदान करता है और सात प्रकृतियों के अनुकूलन के रूप में स्टैट्सरायसन (राइसन डी'एटैट) की व्यापक समझ प्रदान करता है। सप्तांग सिद्धांत राज्यों के बीच बलों के सहसंबंध का

आकलन करने के लिए एक 'बेंचमार्क' भी प्रदान करता है, जो शाद्गुण्य सिद्धांत का आधार है - विदेश नीति के संचालन के छह तरीके। तीसरा (पाठ-इमानेंट) अवधारणा समूह मत्स्य-न्याय सिद्धांत है: एक राजनीतिक मानवविज्ञान जो 'राजनीतिक समुदायों' के बीच हितों के टकराव और सत्ता संघर्ष की समझ प्रदान करता है। मत्स्य-न्याय सिद्धांत परिचालन नीति-निर्माण के लिए आधार प्रदान करता है - (राजनीतिक) प्रतिरोध के खिलाफ किसी की (राजनीतिक) इच्छा को लागू करने के अर्थ में। कौटिल्य का राजनीतिक मानवविज्ञान उपाय अवधारणा समूह (राजनीति के बुनियादी सिद्धांत) की नींव है, जो हालांकि केए से भी पहले का है। विशेष महत्व का है केए का मानक आयाम: कौटिल्यन शासनकला में उद्देश्यपूर्ण तर्कसंगतता और मानकता का अंतर-संबंध।[10,11,12]

आधुनिक भारत में कौटिल्यन विचार की प्रासंगिकता

आधुनिक भारत में कौटिल्य की प्रासंगिकता का पता लगाते हुए, लिबिग ने बताया कि कैसे जवाहरलाल नेहरू ने 1930/31 की सर्दियों में जेल में रहते हुए केए का गहन अध्ययन किया था। केए के साथ नेहरू का जुड़ाव आधुनिक भारत में कौटिल्यन विचार की 'प्रकट उपस्थिति' का पहला संकेतक है। ऐसी विमर्शात्मक सहभागिता हमें भारत के वर्तमान राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और एनएसए शिवशंकर मेनन में भी मिलती है। 'प्रकट उपस्थिति' का दूसरा संकेतक 'चाणक्य रूपक' है - यानी कौटिल्य का एक स्पष्ट, लेकिन गैर-विवादास्पद संदर्भ: चालाक राजनेता जो कुछ भी कर लेता है। प्रकट उपस्थिति का तीसरा संकेतक भारत के समकालीन जीवन जगत में कौटिल्यन विचार की घटनात्मक उपस्थिति है: ए) प्रतीकात्मक रूप से सड़क के नाम, शैक्षणिक संस्थानों या व्यवसायों के नाम या उपनाम, और बी) मीडिया से संबंधित, लेकिन गैर-विवादास्पद : टीवी श्रृंखला, कौटिल्य 'गाइड बुक्स', चाणक्य नीति या कॉमिक्स।
हालाँकि, प्रकट उपस्थिति के अलावा, आधुनिक भारत में कौटिल्य विचार की एक 'अव्यक्त उपस्थिति' भी है: लेखक का उल्लेख किए बिना या उसके बारे में सोचे बिना कौटिल्य विचार के आंकड़ों का संदर्भ। अक्सर ऐसा होता है क्योंकि कौटिल्यन विचार के आंकड़ों को 'मान लिया गया', 'स्वयं-स्पष्ट' या 'सामान्य ज्ञान' के रूप में माना जाता है। कौटिल्यन विचार की प्रतीत होने वाली अमूर्त और मायावी 'अव्यक्त' उपस्थिति को समझने की कुंजी पियरे बॉर्डियू की आदत की समाजशास्त्रीय अवधारणा है: (प्राथमिक) समाजीकरण के दौरान 'समाविष्ट' अतीत धारणा, विचार और व्यवहार के वर्तमान पैटर्न को आकार दे रहा है - व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से। आदत अव्यक्त विचारों का भंडार - 'वाहक' या 'कंटेनर' है - जो 'भूल गए' लेकिन प्रभावशाली हैं। हैबिटस अवधारणा के बिना, आधुनिक भारत में कौटिल्य विचार की अव्यक्त उपस्थिति की पर्याप्त समझ संभव नहीं है। केए भारतीय रणनीतिक समुदाय की आदत का एक, लेकिन महत्वपूर्ण वैचारिक घटक है और भारतीय रणनीतिक संस्कृति का एक वैचारिक घटक है। उस निष्कर्ष को राजनीतिक-रणनीतिक दस्तावेजों का विश्लेषण करते समय प्रदर्शित किया जा सकता है जो स्पष्ट रूप से कौटिल्य का उल्लेख नहीं करते हैं। कौटिल्यन विचार की अव्यक्त उपस्थिति का एक प्रमुख कारक महाकाव्य महाभारत (भीष्म संवाद) और रामायण और पंचतंत्र दंतकथाओं के साथ इसकी समानता (विचार-शैली में) है जो प्राथमिक समाजीकरण में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।[13,14,15]

भारत में उभरता हुआ कौटिल्य प्रवचन

गौरतलब है कि लिबिग ने एक महान शक्ति के रूप में भारत के उदय को आधुनिक भारत में कौटिल्यन विचार की प्रकट और अव्यक्त उपस्थिति से जोड़ा है। लिबिग ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से भारत में एक उभरता हुआ 'कौटिल्य विमर्श' देखा जा सकता है। ऐसा लगता है कि समय आकस्मिक नहीं है: एक महान शक्ति का दर्जा प्राप्त करने के भारत के प्रयास में अंतर्निहित अव्यक्त कौटिल्य आवेग आत्म-जागरूक हो गया है क्योंकि भारत वास्तव में एक महान शक्ति बन गया है। 1947 से, भारत 'कौटिल्य-यथार्थवादी सीखने की अवस्था' से गुजर रहा है। आत्म-बोध की प्रक्रिया "अतीत का पुन: उपयोग" (समसामयिक राजनीतिक-रणनीतिक चुनौतियों का सामना करने में) करने की भारत की राजनीतिक परंपरा का हिस्सा है। माइकल लिबिग ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता स्थापित करने के बाद अब कार्य सैद्धांतिक पहेलियों और अनुभवजन्य से निपटने के लिए अप्रयुक्त विचार और अवधारणा क्षमता के साथ सैद्धांतिक राज्यकला के एक मूलभूत पाठ के रूप में कौटिल्य-अर्थशास्त्र को अंतरराष्ट्रीय राजनीति विज्ञान प्रवचन में मजबूती से स्थापित करना है। प्रशन।
चर्चा के दौरान उठाए गए मुख्य बिंदु:

अर्थशास्त्र कूटनीति सहित शासन कला के लगभग हर पहलू को शामिल करता है। उदाहरण के लिए, हनी-ट्रैप की समकालीन घटना का अर्थशास्त्र में बहुत विस्तृत उपचार मिलता है। इसी प्रकार, अर्थशास्त्र में राजमंडल की अवधारणा समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रों के व्यवहार को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है।[16,17,18]

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सात प्राकृत या राज्य के घटक तत्व हैं, जबकि राज्य की पश्चिमी अवधारणा में केवल चार तत्वों का उल्लेख मिलता है। अर्थव्यवस्था जो राज्य का आधार है, पश्चिमी अवधारणा में गायब है, जबकि अर्थशास्त्र इसे राज्य का एक महत्वपूर्ण घटक मानता है।

चूंकि दुनिया नाटकीय रूप से बदल गई है, इसलिए कौटिल्य के काम की प्रासंगिकता स्थापित करने के लिए बड़ी मात्रा में छात्रवृत्ति की आवश्यकता होगी। अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता स्थापित करने का एक तरीका इसमें सार्वभौमिकता के तत्वों का पता लगाना है, जो लौकिक आयामों से परे है।

शांति और सुरक्षा पर पश्चिमी प्रवचन इस विश्वास पर आधारित है कि सुरक्षा या दूसरे शब्दों में सैन्य सुरक्षा शांति के लिए पूर्व शर्त है, जबकि भारतीय प्रवचन इस विश्वास पर आधारित है कि सैन्य हार्डवेयर की प्रधानता स्थापित किए बिना भी शांति प्राप्त की जा सकती है। भारत के लिए, शांति साधन और साध्य दोनों है; इसके विपरीत पश्चिमी विचारक शांति को केवल उच्च स्तर की सैन्य आत्मनिर्भरता प्राप्त करके प्राप्त होने वाले लक्ष्य के रूप में देखते हैं। हालाँकि, विश्वास की इस भ्रांति के कारण दुनिया में हर जगह युद्ध और संघर्ष हुआ है। कौटिल्य, जिन्हें पहले यथार्थवादी विचारकों में से एक के रूप में देखा जाता है, भी इस भारतीय विश्वास प्रणाली को प्रतिध्वनित करते हैं और किसी राज्य के लिए सैन्य हार्डवेयर के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताते हैं और इसलिए, उनके राज्य के सात तत्व (सप्तांग सिद्धांत) सभी सातों पर समान जोर देते हैं। सप्त का अर्थ है सात और अंग का अर्थ है अंग। इन तत्वों की तुलना वह मानव शरीर के विभिन्न अंगों से करता है। ये सात तत्व अंग हैं, जिनका राज्य के सुचारु संचालन के लिए सक्रिय एवं स्वस्थ होना आवश्यक है। कौटिल्य ने इन सभी तत्वों को अन्योन्याश्रित माना है।

हालाँकि, अर्थशास्त्र भारत में आधिकारिक सोच को प्रभावित नहीं करता है, पश्चिम एशिया के कई देश अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का बहुत गंभीरता से पालन करते हैं।

परिणाम

कौटिल्य (चाणक्य और विष्णुगुप्त के नाम से भी जाने जाते हैं) को अर्थशास्त्र के लेखक के रूप में जाना जाता है (जिसका अनुवाद द आर्ट ऑफ वेल-बीइंग या द साइंस ऑफ पॉलिटी के रूप में किया जा सकता है), एक पुस्तक जो आंशिक रूप से राजनीतिक दर्शन, आंशिक रूप से शासन कला की पुस्तिका है। हालाँकि अर्थशास्त्र का उल्लेख अन्य प्राचीन पुस्तकों में किया गया था, लेकिन पूरा पाठ 1904 में फिर से खोजा गया, जब ताड़ के पत्तों पर लिखी एक प्राचीन प्रति, एक अज्ञात दानकर्ता द्वारा एक भारतीय पुस्तकालयाध्यक्ष को सौंप दी गई थी।

कौटिल्य भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर में फैले मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त की सेवा में एक राजनीतिक सलाहकार थे। अर्थशास्त्र उन साधनों का वर्णन करता है जिनके द्वारा प्रतिस्पर्धी शक्तियों के खतरे और सामाजिक अस्थिरता के अंतर्निहित खतरे के सामने एक राज्य की स्थापना और रखरखाव किया जाना चाहिए। राज्य की अनुपस्थिति में, लोग 'मछलियों के कानून' के अधीन हैं, जिसके तहत ताकतवर कमजोर को निगल जाता है। राजा की भूमिका अपनी प्रजा की समृद्धि बढ़ाना, राज्य की शक्ति बढ़ाना और विजय के माध्यम से क्षेत्र का विस्तार करना है। व्यापार को बढ़ावा देने, बुनियादी ढांचे के विकास (जैसे बांध और संचार) और कानून और व्यवस्था की प्रणाली को सख्ती से लागू करने से लोगों की समृद्धि बढ़ती है। अपराध और सज़ा की एक विस्तृत सूची तैयार की गई है, जिसमें मामूली चोरी के लिए सार्वजनिक रूप से गोबर से लेपित किए जाने से लेकर रानी के साथ सोने पर जिंदा उबाला जाना शामिल है। राज्य की शक्ति व्यापार में एक मजबूत आधार से उत्पन्न होती है जिसका उपयोग एक सुव्यवस्थित सिविल सेवा द्वारा संचालित कराधान प्रणाली के माध्यम से किया जाता है।

क्षेत्रीय सुरक्षा और विजय का मुद्दा कौटिल्य के सबसे तीक्ष्ण राजनीतिक विचार का आधार है, और इसे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र के लिए एक प्रारंभिक मार्गदर्शक माना जा सकता है। यहां वह विभिन्न प्रकार की रणनीतियों से निपटते हैं, जिनका उपयोग विपक्ष की सापेक्ष ताकत के अनुसार विभिन्न स्थितियों से निपटने के लिए स्वतंत्र रूप से या संयोजन में किया जा सकता है। इन रणनीतियों में सुलह (चापलूसी, रिश्वत या अन्य प्रलोभन के माध्यम से), विपक्ष के बीच असंतोष पैदा करना, अन्य शासकों के साथ गठबंधन बनाना, एकजुट होना और शत्रुता और बल का उपयोग शामिल है। रणनीति के उचित विकल्प, संभावित परिणाम और इसमें शामिल कलाकारों के लिए उचित भुगतान के साथ-साथ विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। कौटिल्य की तुलना उनकी शासन कला की व्यापकता के लिए मैकियावेली से की गई है, और न केवल विरोधियों के खिलाफ बल्कि अपने लोगों के बीच राजा की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए छल और साज़िश का उपयोग करने की उनकी इच्छा के लिए भी। हालाँकि, अर्थशास्त्र लोगों के कल्याण,

व्यवस्था और न्याय के सिद्धांतों के प्रति बार-बार प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, एक विजेता का कर्तव्य है 'पराजित शत्रु की बुराइयों के स्थान पर अपने गुणों को प्रतिस्थापित करना, और जहां शत्रु अच्छा था वह दोगुना अच्छा होगा।'[18,19,20]

निष्कर्ष

कौटिल्य ने यह भी लिखा है कि उनकी पुस्तक से पहले भी भारत में राजनीतिक-दर्शन की कम से कम पांच धाराएं प्रचलित थीं, जिनके लिए तेरह लेखकों ने योगदान दिया था। प्राचीन भारत 'ऋत' में विश्वास करता था, जिसका अर्थ है व्यवस्था, नियम, धर्म और कानून का राज। ऋत का विलोम अराजकता है, जिसे जंगलराज की संज्ञा दी जा सकती है। ऐसी अवस्था को 'मत्स्य न्याय' कहा जाता था, जिसमें बलवान का बोलबाला होता है और बड़ी मछली छोटी को खा जाती है।

राजा का धर्म था ऋत का पालन करवाना और अराजकता को टालना। एक अच्छा राज्य वह होता था, जिसमें 'सप्तांग' हों : राजा, मंत्रिपरिषद, राजधानी, क्षेत्र, राजकोष, सेना और विदेशी गठबंधन-सहयोगी। राजकाज के मुख्यतया दो आयाम थे और ऊपर-ऊपर से देखें तो दोनों एक-दूसरे से विपरीत मालूम होते थे, लेकिन उनमें तारतम्य था। पहला राज्य के हितों की रक्षा से सम्बद्ध था। वह राजा को शक्तिशाली बनाता और शत्रुओं को दूर रखता था।

इसके लिए राज्यसत्ता का कठोर, निर्मम और नैतिकता से मुक्त होना जरूरी था, वह अपने हित में साम-दाम-दंड-भेद का उपयोग कर सकती थी। दूसरा आयाम इससे ठीक विपरीत था। यह सत्ता को नियंत्रित करने की बात करता था। यह कहता था कि शासक चाहे जितना शक्तिशाली हो, उसे वैधता प्रजा के समर्थन से ही मिलती है। उसके लिए यह जरूरी था कि वह प्रजा की धारणाओं के प्रति संवेदनशील हो और लोगों पर अतिशय कर न लगाए।

कालिदास ने एक शासक के राजधर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि उसके लिए लोककल्याण के लिए काम करना अपरिहार्य है। उसे अपने मंत्रियों का चयन भी उनके गुणों के आधार पर करना चाहिए। वहीं मंत्रियों से भी यह अपेक्षा थी कि वे बिना किसी डर-संकोच के अपने विचारों को सामने रखें। 'अर्थशास्त्र' दो टूक शब्दों में कहता है कि प्रजा के हितों के विरुद्ध कार्य करना अधर्म है।[19,20,21]

'महाभारत' में तो अत्याचारी शासक के विरुद्ध विद्रोह की भी अनुमति दी गई है। साथ ही कहा गया है कि अगर उत्तराधिकारी योग्य न हो तो उसे सिंहासन पर आरूढ़ नहीं होना चाहिए। 'अर्थशास्त्र' में प्रशासनिक संरचनाओं, वित्त व्यवस्था, सेना और विदेश नीति के बारे में भी निर्देश हैं। इनमें से अनेक सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। लेकिन मेरे विदेशी मित्र भला इस सबको कैसे जानते?

'अर्थशास्त्र' छठी शताब्दी में नष्ट हो गया था और 1905 में मैसूर में ताड़ के पत्तों की एक पांडुलिपि से पुन: प्राप्त हुआ था। इसकी तुलना में यूरोपियन राजनीतिक चिंतकों की किताबें बड़ी संख्या में प्रकाशित हुईं और पूरी दुनिया में पढ़ी गईं। विडम्बना यह है कि आज भी भारत में हमारे राजनीतिक चिंतन की विरासत पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, उन पर न के बराबर अकादमिक शोध होते हैं और हमारे राजनेताओं की भी उनमें कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है।

विडम्बना है कि आज भी भारत में हमारे राजनीतिक चिंतन की विरासत पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, उन पर न के बराबर अकादमिक शोध होते हैं और हमारे राजनेताओं की भी उनमें कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है।[21]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. जॉर्ज मॉडलस्की, "कौटिल्य: फॉरेन पॉलिसी एंड इंटरनेशनल सिस्टम इन द एंशिएंट हिंदू वर्ल्ड", द अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, वॉल्यूम। 58, संख्या 3. (सितम्बर, 1964), पृ. 549-560।
2. ईवी वाल्टर, "पावर एंड वायलेंस", द अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, वॉल्यूम। 58, नंबर 2. (जून., 1964), पीपी. 350-360।
3. मैक्स वेबर, "राजनीति एक व्यवसाय के रूप में," एचएच गर्थ और सीडब्ल्यू मिल्स में, मैक्स वेबर से: समाजशास्त्र में निबंध (एनवाई: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1958), पीपी. 77-127।
4. रोजर बोएशे, "प्राचीन भारत में युद्ध और कूटनीति पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र", द जर्नल ऑफ़ मिलिट्री हिस्ट्री, वॉल्यूम। 67, (जनवरी 2003), पीपी 9-38
5. रितु कोहली, "कौटिल्य का राजनीतिक सिद्धांत - योगक्षेम: कल्याणकारी राज्य की अवधारणा", 1995, डीप एंड डीप प्रकाशन, आईएसबीएन 81-7100-802-x
6. एन.शिव कुमार और यूएस राव, "कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मूल्य आधारित प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश, जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, वॉल्यूम। 15, संख्या 4 (अप्रैल 1996), पीपी 415-423।
7. जोसेफ जे. स्पेंगलर, "कौटिल्य, प्लेटो और लॉर्ड शांग: तुलनात्मक राजनीतिक अर्थव्यवस्था, वॉल्यूम। 113, नंबर 6 (दिसंबर 1969), पीपी 450-457

8. ओ. फ्लान्ज़, "ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यथार्थवाद और आदर्शवाद: ओटो वॉन बिस्मार्क," सीजे नोलन में, एड., एथिक्स एंड स्टेटक्राफ्ट: द मोरल डायमेंशन ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (वेस्टपोर्ट, सीटी: प्रेगर, 1995) पीपी. 39-56।
9. एस. हॉफमैन, ड्यूटीज़ बियॉन्ड बॉर्डर्स: ऑन द लिमिट्स एंड पॉसिबिलिटीज़ ऑफ़ एथिकल इंटरनेशनल पॉलिटिक्स (एनवाई: सिरैक्यूज़ यूनिवर्सिटी प्रेस, 1981), पीपी. 1-43।
10. केनेथ जी.ज़िस्क, "कौटिल्य का अर्थशास्त्र; एक तुलनात्मक अध्ययन", जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी, वॉल्यूम। 107, नंबर 4 (अक्टूबर - दिसंबर 1987), पीपी 838-839
11. टोर्केल ब्रेके, "वील्डिंग द रॉड पनिशमेंट - वॉर एंड वायलेंस इन द पॉलिटिकल साइंस ऑफ कौटिल्य, जर्नल ऑफ मिलिट्री एथिक्स, वॉल्यूम 3, नंबर 1 (2004), पीपी 40-52
12. रोजर बोएशे, "उदारवादी मैकियावेली? कौटिल्य के अर्थशास्त्र के साथ कंट्रास्टिंग द प्रिंस, क्रिटिकल होराइजन्स, 2002, वॉल्यूम। 3 अंक 2, पृष्ठ253, 24पी
13. रोजर डी. स्पेगेले, "राजनीतिक यथार्थवाद के तीन रूप", राजनीतिक अध्ययन, वॉल्यूम। 35 (1987), पीपी 189-210
14. कौटिल्यं अर्थशास्त्रम्। कौटिल्य का अर्थशास्त्र. ईडी। आर. शमा शास्त्री, मैसूर द्वारा, गवर्नमेंट ब्रांच प्रेस में मुद्रित, 1909। xxi, 429, 6 पी। 23 सेमी
15. योगी रमेश, "एथिक्स ऑफ चाणक्य", 1997, साहनी प्रकाशन, नई दिल्ली, आईएसबीएन 81-7564-013-8
16. भारती मुखर्जी, "कौटिल्य की कूटनीति की अवधारणा", अगस्त 1976, मिनर्वा एसोसिएट्स प्रकाशन, कलकत्ता, भारत। आईएसबीएन: ओ-88386-504-1
17. कौटिल्य का अर्थशास्त्र' और मैकियावेलिज्म - एक पुनर्मूल्यांकन, ऐतिहासिक अध्ययनों की त्रैमासिक समीक्षा, 1984 खंड: 23 अंक: 2 पृष्ठ: 10
18. पुष्पेंद्र कुमार, "कौटिल्य अर्थशास्त्र: एक मूल्यांकन" 1989 नाग पब्लिशर्स, आईएसबीएन: 81-7081-199-6
19. केपीए मेनन, "राजनीति पर कौटिल्य", नाग पब्लिशर्स, 1998
20. केएम अग्रवाल, "कौटिल्य ऑन क्राइम एंड पनिशमेंट", श्री अल्मोडा बुक डिपो पब्लिशिंग, 1990
21. वीकेगुप्ता, "कौटिल्यन न्यायशास्त्र", बीडीगुप्ता पब्लिशर्स, 1987